अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो ब्राह्मणकुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो तक्कसिलायं सिप्पं उग्गण्हित्वा आगन्त्वा बाराणसियं दिसापामोक्खो आचरियो अहोसि। अथेकस्स ब्राह्मणस्स चतस्सो धीतरो अहेसुं, ता एवमेव चत्तारो जना पत्थयिंसु। ब्राह्मणो "कस्स नु खो दातब्बा"ति अजानन्तो "आचरियं पुच्छित्वा दातब्बयुत्तकस्स दस्सामी"ति तस्स सन्तिकं गन्त्वा तमत्थं पुच्छन्तो पठमं गाथमाह—

"सरीरदव्यं वुड्ढब्यं, सोजच्चं साधूसीलियं। ब्राह्मणं तेव पुच्छाम, कन्नु तेसं वनिम्हसे"ति ।।

तत्थ "सरीरदव्य"तिआदीहि तेसं चतुन्नं विज्जमाने गुणे पकासेति। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो— धीतरो मे चत्तारो जना पत्थेन्ति, तेसु एकस्स सरीरदव्यमत्थि, सरीरसम्पदा अभिरूपभावो संविज्जति। एकस्स वुड्ढब्यं वुड्ढिभावो महल्लकता अत्थि। एकस्स सोजच्चय सुजातिता जातिसम्पदा अत्थि। "सुजच्च"न्तिपि पाठो। एकस्स साधुसीलियं सीलसम्पदा अत्थि। ब्राह्मणं तेव पुच्छामाति तेसु असुकस्स नामेता दातब्बाति अजानन्ता मयं भवन्तं ब्राह्मणञ्ञेव पुच्छाम। कन्नु तेसं वनिम्हसेति तेसं चतुन्नं जनानं कं वनिम्हसे, कं इच्छाम, कस्स ता कुमारिका ददामाति पुच्छति।

तं सुत्वा आचरियो "रूपसम्पदादीसु विज्जमानासुपि विपन्नसीलो गारय्हो, तस्मा तं नप्पमाणं अम्हाकं सीलवन्तभावो रुच्चती"ति इममत्थं पकासेन्तो दुतियं गाथमाह—

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्व ब्राह्मण-कुल में जन्म ग्रहण कर बड़े हो तक्षशिला गये। वहाँ शिल्प सीख, लौट कर वाराणसी में प्रसिद्ध आचार्य हुए। एक ब्राह्मण की चार पुत्रियाँ थीं। वह इसी प्रकार चार वर्नों को चाहती थीं। ब्राह्मण ने यह न जानते हुए कि किसे दें सोचा कि आचार्य से पूछ कर जिसे देना योग्य होगा, उसी को दूँगा। उसने आचार्य के पास जा यह प्रश्न पूछते हुए पहली गाथा कही—

शरीर के सौन्दर्य वाले को, बड़ी आयु वाले को, उत्तम जाति वाले को या सदाचारी को? तुमसे पूछते हैं कि उन्हें किसे दें?

सरीरदव्यंति—आदि उन चारों में विद्यमान् गुणों का प्रकाशन किया गया है। अभिप्राय यह है—मेरी पुत्रियाँ चार प्रकार के जनों को चाहती हैं। उनमें से एक के पास सरीरदव्यं है, शरीर सम्पत्ति है, सौन्दर्य है। एक के पास वड्ढब्यं वृद्धभाव, ज्येष्ठपन है। एक के पास सोजच्चं उत्तम जाति वाला होना, जाति सम्पत्ति है। सुजच्चं भी पाठ है। एक के पास साधुसीलियं सुन्दर चरित्र होना, सदाचार सम्पत्ति है। ब्राह्मणन्त्वेव पुच्छाम; उनमें से यह अमुक को देनी चाहिए, हम इसका निश्चय न कर सकने के कारण आप ब्राह्मण से ही पूछते हैं। कन्नु तेसं वनिम्हसेति—उन चार जनों में से किसका वरण करें? किसकी इच्छा करें। पूछता है कि कुमारियाँ किसे दें?

इसे सुन आचार्य ने कहा—"रूप सम्पत्ति आदि विद्यमान रहने पर भी दुःशील निन्दित है। इसलिए वह ठीक नहीं। हमें शीलवान् ही अच्छा लगता है।" इस विचार को प्रकट करने के लिए दूसरी गाथा कही—

''अत्थो अत्थि सरीरस्मिं, वुड्ढब्यस्स नमो करे । अत्थो अत्थि सुजातस्मिं, सीलं अस्माकं रुच्चती'' ति

तत्थ अत्थो अत्थि सरीरस्मिन्ति रूपसम्पन्ने सरीरेपि अत्थो विसेसो वुड्ढि अत्थियेव, ''नत्थी''ति न वद वुड्ढब्यस्स नमो करेति वुड्ढभावस्स पन नमक्कारमेव करोमि। वुड्ढभावो हि वन्दमाननं लभति। अत्थो अ सुजातस्मिन्ति सुजातेपि पुरिसे वुड्ढि अत्थि, जातिसम्पत्तिपि इच्छितब्बायेव। सीलं अस्माकं रुच्चतीति अम पन सीलमेव रुच्चति। सीलवा हि आचारसम्पन्नो सरीरदब्यविरहितोपि पुज्जो पासंसोति। ब्राह्मणो तस्स व सुत्वा सीलवन्तस्सेव धीतरो अदासि।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि— सच्चपरियोसाने ब्राह सोतापत्तिफले पतिट्ठहि। ''तदा ब्राह्मणो अयमेव ब्राह्मणो अहोसि, दिसापामोक्खो आचरियो पन अह अहोसि''न्ति।

साधुसीलजातकं

रुहकवग्गो

●

~~नतंदळ्हवग्गो~~

~~१. बन्धनागारजातकं~~

न तं ~~दळ्हं बन्धनमाहु धीरा'ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो बन्धनागारं आरब्भ कथेसि।~~

शरीर की भी अपनी विशेषता है, ज्येष्ठ को नमस्कार होता है, सुजात की भी विशेषता है; लेकिन हमें शीलवान् अच्छा लगता है।

अत्थो अत्थिसरीरस्मींति–रूपवान् शरीर में भी अर्थ, विशेषता, उन्नति होती है। नहीं होती है, नहीं कहते। वुड्ढब्यस नमो करेति–ज्येष्ठ को हम नमस्कार ही करते हैं। ज्येष्ठ की ही वन्दना होती है। अत्थो अत्थि सुजातस्मींति–सुजात पुरु की भी उन्नति होती है। जाति-सम्पत्ति भी इच्छा करने की वस्तु है। सीलं अस्माकरुच्चतीति–हमें शील ही अच्छा लगत है। शीलवान, सदाचारी शरीर-सौन्दर्य से रहित भी पूज्य प्रशंसनीय होता है।

ब्राह्मण ने उसकी बात सुन सदाचारी को ही पुत्रियाँ दीं।

शास्ता ने यह धर्म-देशना कह सत्यों को प्रकाशित कर जातक का परिणाम संघटित किया। सत्य-प्रकाशन के अन्त में ब्राह्मण स्रोतापत्ति फल में प्रतिष्ठित हो गया। उस समय ब्राह्मण यही था; प्रसिद्ध आचार्य तो मैं ही था।

साधुशील जातक